बन्दर और मगरमच्छ

सन्तराम वत्स्य

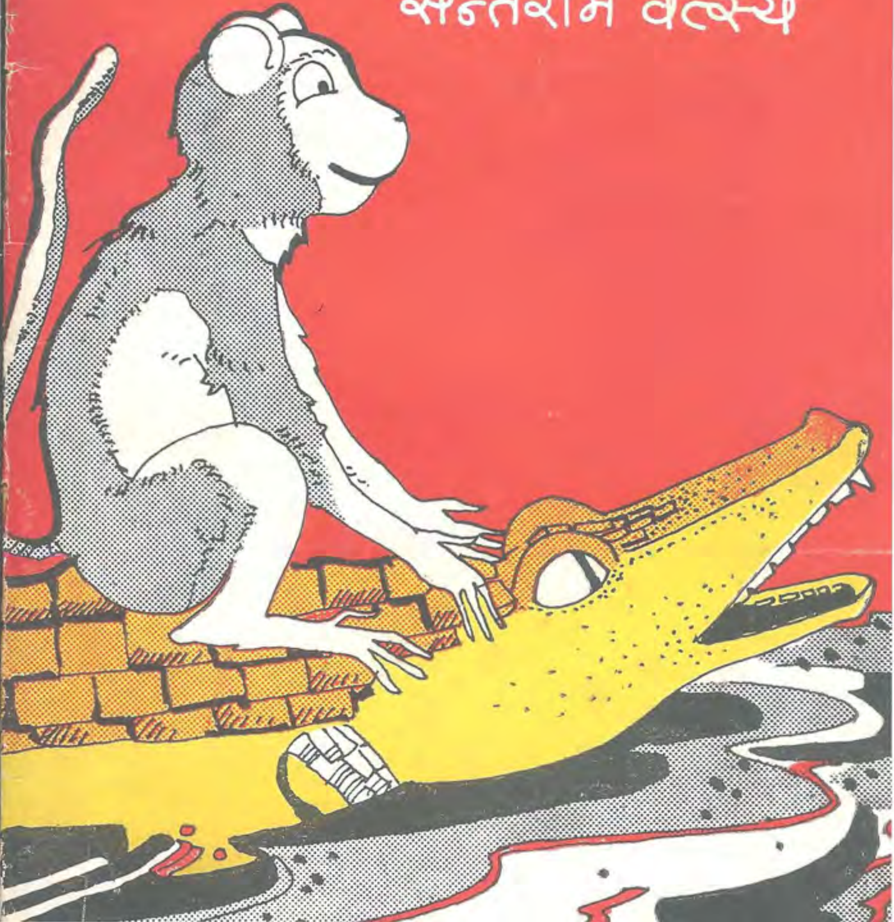

बन्दर और मगरमच्छ

सन्तराम वत्स्य

पुस्तकायन

मूल्य 6.00

प्रकाशक/पुस्तकायन 2/4240 ए, अंसारी रोड, नई दिल्ली-110 002/
संस्करण: 1989
मुद्रक : गायत्री ऑफसेट प्रेस,
नौएडा-201 301
Bander Aur Magar Mach
By: Santram Vatsya

सिन्धु नदी के तट पर एक बड़ा पुराना जामुन का पेड़ था। इस पेड़ पर बड़े बड़े जामुन फलते थे। इसी पेड़ पर एक बड़ा-सा एकल बन्दर रहता था। इस बन्दर का नाम था 'ललमुँहा'।

ललमुँहा बन्दर जितने जामुन खाता, उससे ज्यादा खराब करता। फिर भी उसके लिए वहाँ जामुनों की कमी नहीं थी क्योंकि वह दूसरे किसी बन्दर को वहाँ फटकने नहीं देता था। उसकी किलकारी सुनकर दूसरे बन्दर दूर से ही भाग जाते।

लालमुँहा जामुन की डाल-डाल कूदता-फाँदता रहता और बहुत कम नीचे उतरता। हाँ, अपने झुण्ड से अलग-अलग पड़ा वह कभी कभी उदास हो जाता।

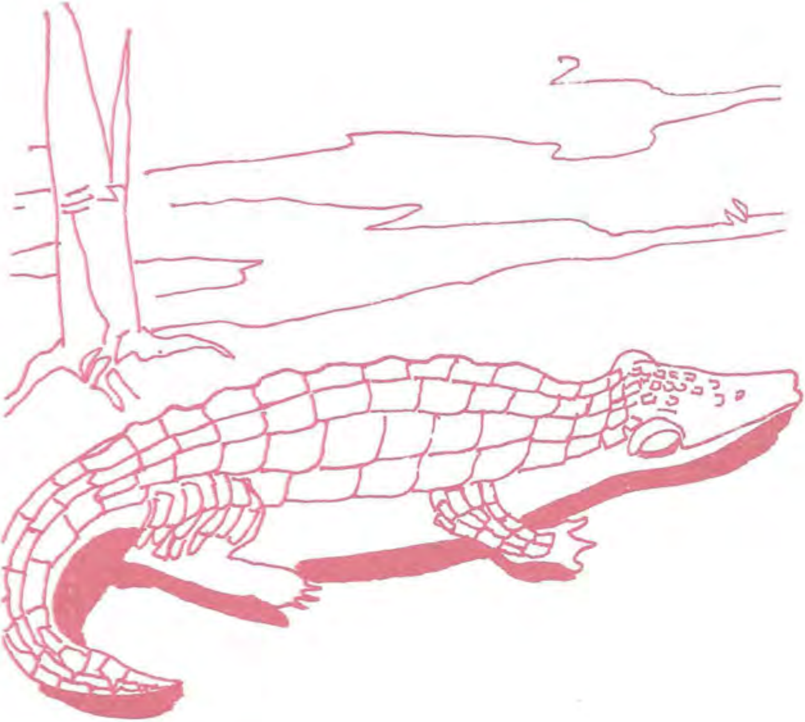

एक दिन, जबकि तट की रेत धूप में चमक रही थी, बड़मुँहा नामक मगरमच्छ पानी से निकल कर मुलायम रेत के बिछौने पर लेटा धूप का मज़ा ले रहा था।

ललमुँहा काले-काले पके जामुनों को चुन-चुनकर खा रहा था कि उसकी नज़र नीचे धूप में लेटे मगरमच्छ पर पड़ी।

ललमुँहा ने बड़मुँहे मगरमच्छ को पुकारा। फिर 'राम-राम' करने के बाद बोला—धूप सेंकने का मज़ा लिया जा रहा है आज। यार। आज तुम मेरे ही मेहमान रहे। प्यारे तुम भी क्या याद करोगे कि कोई मिला था। आज मैं तुम्हें जी भरकर बढ़िया

जामुन खिलाऊँगा। ऐसी बढ़िया चीज़ तुमने पहले कभी न खाई होगी। बस, उंगलियाँ चाटते रह जाओगे। पर कहीं गुठलियाँ न चबा जाना। तब थू-थू करते रहोगे और मेरे पुरखाओं को गालियाँ देने लगोगे।

ललमुँहे ने एक गुच्छा तोड़ा और बड़मुँहे की ओर फेंकते हुए बोला, 'लो, करो श्रीगणेश।'

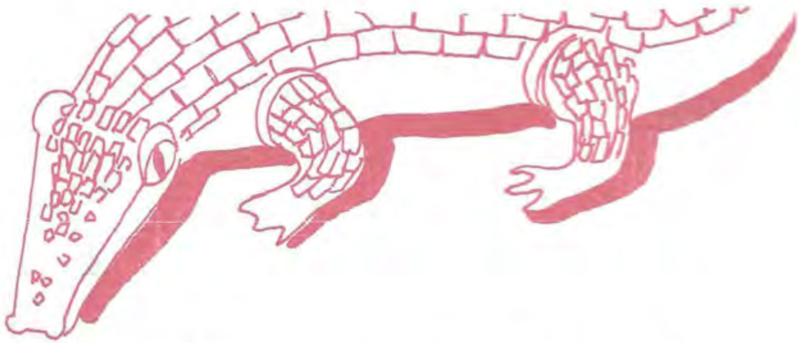

बड़मुँहे के जामुन खत्म हो जाते तो वह सिर उठाकर बन्दर की ओर देखने लगता। बन्दर फिर एक गुच्छा फेंकता तो मगरमच्छ उसे ज़मीन पर पड़ने से पहले ही लपक लेता।

बीच-बीच में बन्दर उससे हँसी-मज़ाक भी करता जाता। कभी कहता, तुम्हारे पेट है या पेटी जो भरती ही नहीं है। फिर कुछ जामुन फेंकने के बाद कहता, ''मेरे यार! तुमने तो मथुरा के पण्डों को भी मात कर दिया।''

बड़मुँहा कहता, "मगरमच्छों को न्यौता देना हँसी-मज़ाक नहीं है। तुम सस्ते में मगरमच्छ जिमाने का पुण्य लूटना चाहते हो।"

फिर रोज ही यह सिलसिला चलने लगा। दोनों दोस्त पहले तो जामुन खाते और फिर हँसी-मज़ाक

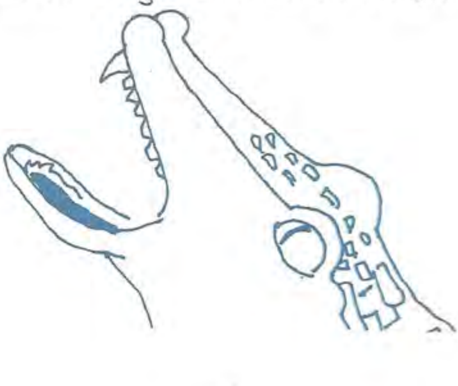

का दौर चलता, फिर कभी घर-गृहस्थी और दुनिया-जहान की बात होने लगतीं। बात मौसम से शुरू होती और आजकल के लड़के-लड़कियों पर आ टिकती। कभी हिप्पियों का ज़िकर आता और कभी स्कूलों कालेजों की पढ़ाई का। ललमुँहा अपने बचपन की कहानियाँ सुनाता और बड़मुँहा बताता कि नदी में रहकर जिस जिसने मगरमच्छ से बैर किया उसका क्या हाल हुआ।

एक दिन बातों ही बातों में ललमुँहे ने बड़मुँहे से कहा, प्यारे लगता है कि भाभी आज कल तुम पर नाराज़ हैं और तुम्हें घर से भूखा ही भेज देती हैं।

बड़मुँहे ने कहा, "महीने में पच्चीस दिन खिला कर भेजती हैं तो पांच दिन भूखा भी भेजे तो कोई हर्ज़ नहीं। पर मियाँ तुम्हारे घर तो कोई एक दिन भी घास डालने वाली नहीं है।

लालमुँहा बोला—हम तुम्हारी तरह जोरू के गुलाम नहीं है। अपने घर के बादशाह हैं।

बड़मुँहा बोला, तुम्हारे जैसे बन्दर को कौन अपनी बेटी ब्याह देगा। बीवी-बच्चों को पालने की भी हिम्मत होनी चाहिए।

प्यारे लाल, मैं तुम्हारे जैसे मगरमच्छ को कितने दिनों से पाल रहा हूँ, इसी से साबित होता है कि

बीवी-बच्चों को भी पाल सकता हूँ। बन्दर घर-गृहस्थी के चक्कर में पड़कर घनचक्कर बन जाता है। हां, मगरमच्छ की बात दूसरी है। ललमुँहे ने कहा।

बड़मुँहे ने कहा, घर-गृहस्थी में जो सुख-चैन मिलता, तू उसको क्या समझ सकता है। बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

ललमुँहे ने कहा, घर गृहस्थ के सुख-चैन की बात तो तुम्हारी रोनी सूरत से साफ ज़ाहिर होती है। इस तरह उनकी बातें होतीं।

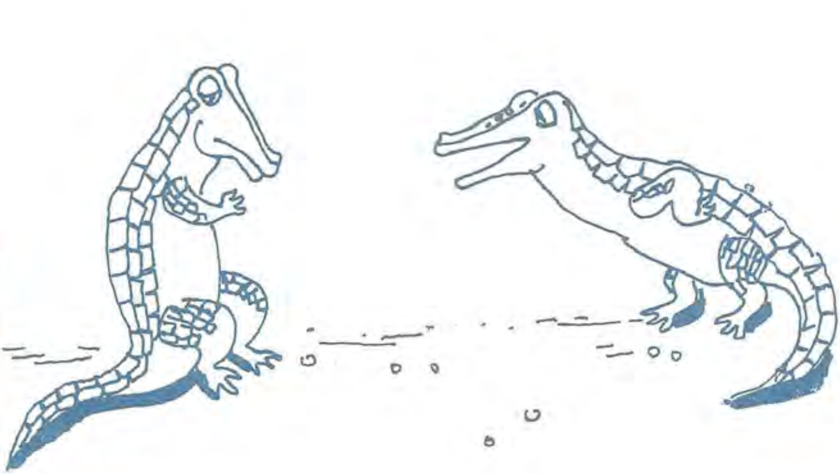

एक दिन बन्दर ने जामुनों का बड़ा सा गुच्छा फेंका और कहा, "अरे पेटू पाण्डे! यह तुम्हारे लिए नहीं है, भाभी के लिए है। इसे घर ले जाना और कहना कि तुम्हारे देवर ने यह फल भेजें हैं।"

मगरमच्छ उन जामुनों को घर ले गया और अपनी मगरमच्छी को दे दिया। फिर क्या था, मगरमच्छी उन मीठे जामुनों को खाकर बोली, यह क्या थोड़े से जामुन लेकर आए। यह तो ऊँट के

मुँह में जीरा देने वाली बात हुई। कल को थैला भर कर लाना। हाँ, अभी से कहे देती हूँ, कहीं भूल न जाना।

बस, उस दिन से मगरमच्छ बन्दर से मांग कर प्रतिदिन जामुन घर ले जाता और मगरमच्छी चाव से खाती। यहाँ तक कि वह मगर मच्छ की प्रतीक्षा में दरवाज़े पर खड़ी रहती और उसके आते ही झट से थैला झपट लेती।

इतने दिनों से बन्दर भाभी के लिए जामुन भेज रहा था पर मगरमच्छ ने अपनी घर वाली से कभी उसका नाम तक नहीं लिया।

आखिर एक दिन मगरमच्छी अपने पति से बोली, क्योंजी, आप कहाँ से रोज़ इतने बढ़िया काले-काले जामुन लाते हैं?

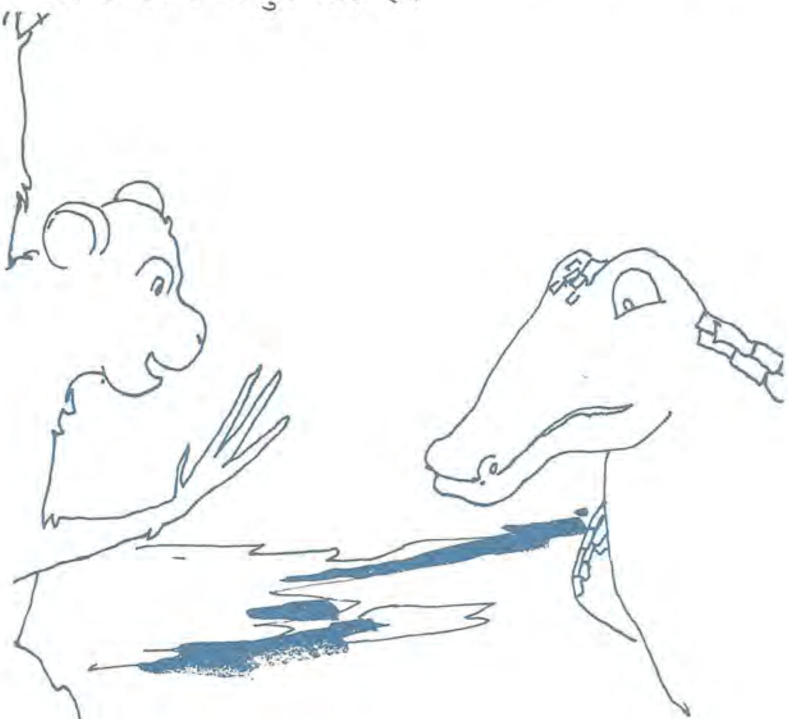

अब तो मगरमच्छ को असली बात बतानी ही पड़ी। बोला, "मेरा एक पक्का मित्र है बन्दर। वही ये फल मुझे देता है।"

मगरमच्छी बोली, वह तुम्हारा मित्र बन्दर तो खूब जामुन खाता होगा। फिर तुम जानो जो रोज़ ऐसे मीठे जामुन खाएगा, उसका दिल तो न जाने कितना मीठा होगा। मैं तो उसका दिल खाऊँगी। जो तुम चाहो कि यह घर बसा रहे तो उसका दिल मुझे लाकर दो, नहीं तो मैं तुम्हारे पास रहने की नहीं। मेंरा मन कहता है कि अगर मुझे उसका दिल खाने को मिल गया तो फिर मैं कभी बूढ़ी नहीं

होऊँगी और न मरुँगी ही। फिर तो मेरा तुम्हारा उम्र भर का साथ है ही। जोरू का गुलाम मगर-मच्छ गिड़गिड़ाता हुआ बोला, भलिए, ऐसा मत बोल। वह एक तो मेरा मुँह बोला मित्र, दूसरे रोज हम दोनों की मीठे जामुन खिलाता है, ऐसे मित्र की जान लेकर मैं नरक में नहीं जाऊंगा। अब जिद्द छोड़। इसके अतिरिक्त तू जो कुछ कहेगी वह ला दूंगा। शार्कस्किन साड़ी या स्पंज का गद्दा, शंखों की माला या नत्थ के लिए बड़ा-सा मोती। बस, तू मुँह खोल कर एक बार, कह तो सही। तू कहे तो मैं तेरे लिए आसमान के तारे तोड़ कर ला दूँ।

पर तिरिया हठ भी भगवान् ने क्या गज़ब की चीज़ बनाई है। मगरमच्छी बोली, जा-जा तेरे जैसे गपोड़ शंख मैंने बहुत देखे हैं। जामुन के पेड़ पर

का बन्दर तो पकड़ कर ला नहीं सकता और कहता है कि आसमान के तारे ला दूँगा। तुमने मुझे गाँव की छोकरी समझ रखा है जो बातों से बहकाना चाहता है।

मगरमच्छ की जब एक न चली तो भाई ने चारों तरफ देखा कि कोई पड़ौसी देख तो नहीं रहा है और फिर श्रीमती जी के पांव पकड़ लिए। लगा गिड़गिड़ाने।

पर श्रीमती जी तो और भी ऐंठने लगीं। बोलीं, मैं सब जानती हूँ। मर्दों के चलितर मुझसे छिपे नहीं है। यह दिखावे के लिए मेरी मिन्नत-खुशामद हो रही है। मैं सब जानती हूँ, मुझे तुम्हारी

एक-एक हरकत का पता है। वो जो तेरे दिल की रानी है न, उस के लिए सब कुछ कर सकता है और मैंने एक छोटा-सा काम बताया तो उस के लिए भी टाल-मटोल कर रहा है। बन्द करो यह पांव पकड़ने का नाटक। और उसने झटककर अपना पाँव खींच लिया। मुझे तो लगता है कि कोई बन्दर-बन्दर तुम्हारा मित्र नहीं है। यह तो कोई मेरी सौत है। अगर बन्दर है तो तुझे उसे मारने में किस बात की झिझक है। देखो जी, मैं सौ बातों की एक बात कहे देती हूँ, खाऊँगी तो उसका कलेजा नहीं तो आज से मेरी भूख हड़ताल। तुम्हारे सिर की कसम जो मैं अपनी बात को झूठा करूँ।''

अब तो मगरमच्छ के पाँव के नीचे से पानी सरक गया। वह सोचने लगा, 'अब क्या किया जाए। कैसे मित्र के साथ विश्वासघात करूँ, कैसे उसे मारुँ। यही सोचता हुआ वह तैरता-तैरता बन्दर के पास पहुँचा।'

बन्दर ने उसे कुछ घबराया सा देखकर पूछा, ''क्या मामला है, बड़ी देर कर दी आने में। कुछ

उदास से दिखाई दे रहे हो। खैर तो है? बेटा! लगता है कि जोरू से पिटे हो।"

मगरमच्छ बोला, "क्या बताऊँ यार। तेरी भाभी ने आज मुझे ऐसी जली कटी सुनाई कि कुछ मत पूछो।"

बन्दर को मज़ाक सूझा, "भैया यह तो घर-गृहस्थी बसाने के मज़े हैं। इसीलिए न मुझे भी घर-गृहस्थी बसाने की सलाह देते हो। बाज आए बाबा ऐसी गृहस्थी से।"

मगरमच्छ बोला, "सारी बात सुनी नहीं और बीच से ही ले उड़े। हमारे घर में तुम्हारी वज़ह से लड़ाई हुई है।"

"मेरी वज़ह से। एकदम झूठ। मैंने आज तक तुम्हारे घर की चौखट तक नहीं देखी, भाभी साहिबा के दर्शन तक नहीं किये, फिर मेरी वज़ह से लड़ाई होने का मतलब।" बन्दर ने उत्तर दिया।

मगरमच्छ बोला, "बिल्कुल ठीक कह रहे हो, और लड़ाई की यही वज़ह है। वह कहती है कि मेरा बन्दर देवर रोज़ मुझे झोले भर-भर मीठे फल भेजता है और तुम उसे एक दिन भी अपने घर नहीं बुलाते, एक दिन भी उसे अच्छे अच्छे पकवान नहीं खिलाते। अब समझे हमारी लड़ाई की वज़ह क्या है? और आज तो उसने एक दम अल्टीमेटम दे दिया है। बोली, जब तक देवर का मुँह न देख लूँगी, अन्न-जल ग्रहण न करूंगी। सौ भैया, इसी लड़ाई में आज देर हो गई। अब तुम जल्दी से नीचे उतर आओ मेरे साथ चलो। तेरी भाभी ने तेरे स्वागत के लिए चौक पूरा है और द्वार बन्दरवार टांगे हैं। वह बैठी हमारी राह देख रही है।"

बन्दर बोला, "तो यह बात है। भाभी ने इतने सम्मान के साथ बुलाया है तो जरूर चलूँगा। पर नहीं-नहीं, मैं पानी के भीतर तुम्हारे घर में जा ही कैसे सकता हूँ?"

मगरमच्छ ने समझाया, "हमारा घर पानी के भीतर नहीं, पानी के किनारे है। सो तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ, मैं तुम्हे बेखटके ले चलूँगा।"

बन्दर की तसल्ली हो गई। उसने कहा, "यह बात है तो फिर भले काम में देर काहे की।"

मगरमच्छ पेड़ के नीचे पानी में जा खड़ा हुआ और बन्दर ने एक टहनी से लटक कर छलांग लगाई और मगरमच्छ की पीठ पर जा बैठा।

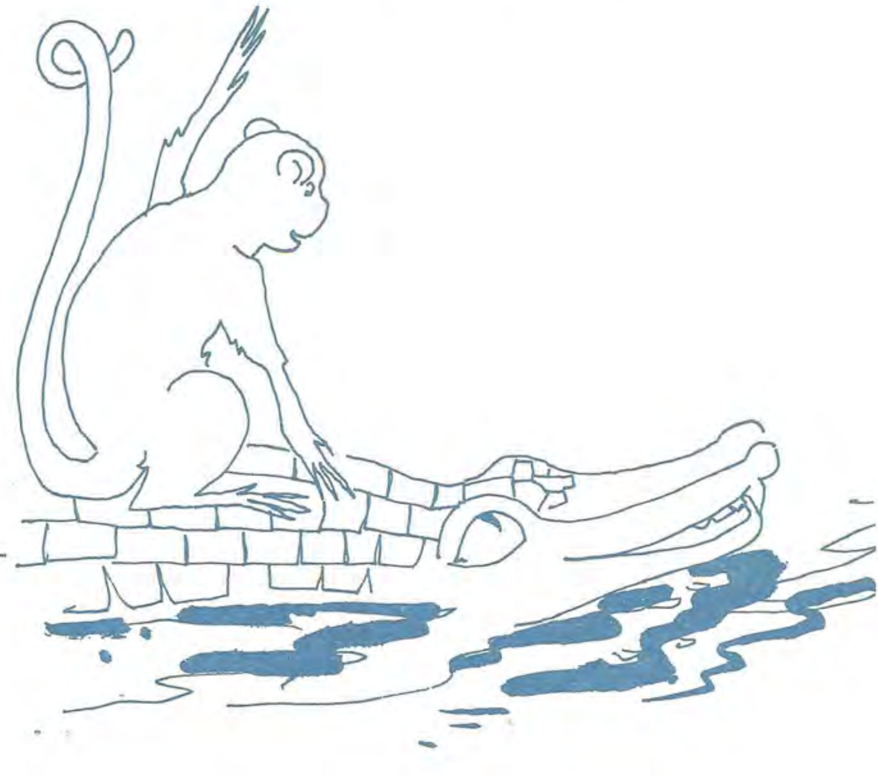

मगरमच्छ बन्दर को पीठ पर लिए नदी पार करने लगा। जब वह नदी के बीच पहुँच गया तो बन्दर ने कहा, "मित्र, जरा धीरे धीरे तैरो। पानी की तरंगों से मैं ढका जा रहा हूँ।"

मगरमच्छ ने मन में सोचा, 'बच्चू राम! जामुन के पेड़ पर तुम्हारी उछल कूद देखते ही बनती थी। किसी को कुछ समझते ही नहीं थे। अब पानी में पीठ पर बैठे हो फिर भी नानी याद आ रही है। यहाँ तुम मेरी पीठ से तिल भर भी इधर उधर नहीं सरक सकते। इसलिए सच्ची बात तुम्हें बताता हूँ।' मगरमच्छ आँखों में आँसू भर कर बोला, "मित्र, मैं धोखा देने लिए तुमसे माफी चाहता हूँ। सच बात तो यह है कि अब तुम थोड़ी ही देर के मेहमान हो। सो भैया। तुम मरने से पहले भगवान को याद कर लो।"

बन्दर को मौत सामने दिखाई दे रही थी। पानी में वह कहीं भाग भी नहीं सकता था। उसने डूबती सी आवाज़ में मगरमच्छ से कहा, "भैया मैं तुम्हारे मगरमच्छ के आँसू देख रहा हूँ। पर मुझे यह तो बताओ कि मैंने तुम्हारा या भाभी का क्या बिगाड़ा

था जो तुम मुझे मारना चाहते हो?"

मगरमच्छ बोला, "तुम उसके लिए जामुन भेजते थे न, वे उसे बहुत पसन्द थे। सो भैया जो कहते हैं सो, आजकल उसके बाल-बच्चा होने वाला है। तुम जानते ही हो, इन दिनों औरतों के मन में अनौखी चीज़ों को खाने की इच्छा होती है सो तुम्हारी भाभी की इच्छा तुम्हारा कलेजा खाने की है। बस, इसीलिए तुम्हें ले जा रहा हूं।"

अब तो बन्दर को अपने प्राण बचाने की तरकीब सूझ गई। बोला, "अरे, तो यह बात थी। तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया। मैं तो अपने कलेजे को निकाल कर जामुन के पेड़ के खोखले में संभाल कर रख छोड़ता हूँ, मैं बड़े आराम से उसे भाभी के लिए दे सकता हूँ। तुम मुझे बिना कलेजे के ही वहाँ से उठा लाए। अगर हम कलेजे को इस तरह निकाल कर न रख दें तो उछल कूद मचाते समय वह मुँह में आ जाए। तुमने तो सब गुड़ गोबर कर दिया। अब भाभी जी खामखाह हम दोनों पर बिगड़ेंगी।"

मगरमच्छ बोला, "तो यह बात है। मैं तो समझता था कि बन्दरों का कलेजा भी मगरमच्छों की तरह उनकी छाती में ही होता होगा। खैर, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। चलो, लौट चलते हैं।"

मगरमच्छ बंदर को पीठ पर लादे लौट चला। जामुन के पेड़ के पास पहुंचकर बन्दर पीठ से उतर पड़ा और जामुन पर चढ़ गया।

नीचे खड़ा मगरमच्छ उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था। बड़ी देर तक बन्दर को लौटते न देखकर वह बोला, "अरे भई, जरा जल्दी करो न।"

बन्दर ने ऊपर से घुड़की देकर कहा, "अबे ओ जोरू के हुक्म के गुलाम! भाग जा यहाँ से खबरदार जो दोबारा इस तरफ कदम भी रखा। अब तो वह तेरा ही कलेजा खाएगी। तेरे दोस्त की ऐसी-तेसी, धोखेबाज।"